Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 14th Oct. 2018, Revised on 18th Oct. 2018; Accepted 26th Oct. 2018

आलेख

राष्ट्रीयता की भावना के विकास में शिक्षण की भूमिका

* डॉ. नरेंद्र कुमार पाल
Asst. Professor
M Ed College, 38 Keshav Banglow, Shahibaug, Ahmedabad
Email – drnavinsir@yahoo.in, 9924181920

मुख्य शब्दः राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय भावना, शिक्षण आदि।

लेख–संक्षेप

राष्ट्रीय शिक्षा की अवधारणा निश्चित रूप से आधुनिक है, जो राष्ट्रीय संस्कृति, इतिहास, आंदोलन, विविधता, महापुरुषों के योगदान से प्रेरित और पोषित है। वर्तमान लेख भारत की कुछ विश्वविद्यालयों में हुई देशविरोधी प्रवृर्तियो को ध्यान में रखते हुए शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए प्रकाश डाला गया है। कुछ विद्यार्थियों में गलत विचारधारा से प्रेरित होक उढ़ाये गए गलत कदमो से काफी आलोचना का सामना पड़ता है. प्रस्तुत लेख में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करके शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सही दिशा दिखा सकते है. प्रस्तुत लेख में राष्ट्रीय भाव के विकास का महत्व, शिक्षण की भूमिका, शिक्षण में नवाचार आदि बिन्दुओ पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

प्रस्तावना:

राष्ट्रिय भावना का विकास और राष्ट्र के प्रति हमारी जवाबदेही एक ऐसे समाज का निर्माण करता है जिसकी शुरुआत हमसे होती है। देश के सभी नागरिको में देश के प्रति स्नेह और कुछ कर गुजरने का जस्बा ही किसी देश को विकास की दिशा में आगे ले जा सकता है। हमारा देश भारत सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है। हर धर्म के और विविध भाषाओ और संस्कृतिओं को मानने वाले लोग एकसाथ देश में रहते है। ज्यादातर देश के प्रति लोगो को भावना बेहद संवेदनशील और राष्ट्रीय विचारधारायुक्त देखी जा सकती है। लेकिन कई बार अखबार मे या सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर सुनने में आता है की अपने ही देश की किसी युनिवर्सिटी के किसी समारोह में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रगान के समय कुछ विद्यार्थियों ने खड़े होकर सम्मान नहीं दिया। कई बार देश की यूनिवर्सिटी में ऐसी दुखद घटनाएं सुनने में आती है की विश्वविद्यालय के छात्रों का देशविरोधी प्रदर्शन होता है। ऐसी घटनाये हमें यह सोचने पर मजबूर करती है की क्या किसी देश की राष्ट्रीय भावना और देश के प्रति सम्मान की सोच सबसे युवा पीढ़ी तक शैक्षिक संस्थानों में सही ढंग से प्रेषित की जा रही है? क्या शिक्षण की भूमिका सही दिशा में है? क्या शिक्षण संस्थानों से जुड़े कर्मचारियों की भूमिका सही है? क्या पाठ्यक्रम में अभी भी सुचारु बदलाव की आवशयकता है? इत्यादि कई पहलुओं पर चिंतन करने की जरुरत है।

प्रस्तुत शोध–लेख राष्ट्रीयता की भावना के विकास में शिक्षण की वर्तमान भूमिका पर प्रकाश डालने का एक प्रयास है।

राष्ट्र भावना के विकास का महत्व :

किसी भी राष्ट्र का विकास देशवासियो की महेनत, परिश्रम और सही दिशा में किये गए कार्यो पर आधारित है। वर्तमान समय में देश की प्रगति भविष्य में विश्व में हमारा स्थान मजबूत करती है। भारत देश का इतिहास, संस्कृति, भाषा, विवधता में एकता, राष्ट्र के महापुरुषों और व्यक्तियों के कार्यो को क्रमबद्ध तरीके से विद्यार्थियों और देश के सभी नागरिको तक पहोचे तभी उन्हें राष्ट्र का महत्व समझ सकते है। जब तक देश के प्रत्येक नागरिक देश के प्रति भावना जागरूक नहीं होगी, वह स्वयं तक ही सिमित रहेगा। जब देश के प्रत्येक नागरिक को देश और देश के प्रति राष्ट्रभावना का महत्व समझेंगे तभी वह स्वयं खुद को देश के विकास में श्रेष्ठ योगदान देने को प्रेरित होंगे। किसी भी देश का अस्तित्व वहा बसने वाले देशवासियो के हाथो में है। और देशवासियो को राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभावना का सिंचन निरंतर होता रहे तभी देश के विकास में बहेतर योगदान दे सकेंगे। और राष्ट्र का भी विकास हो सकेगा। वर्तमान समय में भारत के प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए बहेत्रिन प्रयास कर रहे है। आने वाले समय में भारत विश्व–गुरु बनेगा और सम्पूर्ण विश्व को दिशा दिखायेगा।

राष्ट्रीयता के विकास में शिक्षा की भूमिका :

शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिये जरिये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक किसी भी विचारधार, राष्ट्रीयता, जस्बा, संस्कृति और ज्ञान का हस्तांतरण किया जा सकता है। राष्ट्रीयता का विकास और प्रसार शिक्षण के माध्यम से वर्षो से किया जा रहा है और निरंतर होता भी रहेगा। हमारे देश में राष्ट्र के प्रति प्रेम और देश विकास के प्रति हमारी सोच के लिए शिक्षा में विविध कार्यक्रम, पाठ्यक्रम की रचना, शिक्षण संस्थानों में समानता जैसे कई प्रयासों से विद्यार्थी जीवन की शुरुआत से ही विद्यार्थियों को देश, देश की संस्कृति, देश का इतिहास, देश का महत्व, देश के विकास में योगदान देनेवाले महान व्यक्तियों के जीवन का बेहद गहराई से

और विस्तार से वर्णन किया जाता है। इन सभी प्रयासों से विद्यार्थियों में देश के प्रति एक बेहद ही संवेदनशील सकारात्मक राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है।
शिक्षा की भूमिका पर विस्तार से बात करते हुए पठ्यक्रम, शिक्षक, शैक्षिक कार्यक्रम, पढ़ने का तरीका, सेमिनार, व्याख्यान, वर्कशॉप जैसे कई पहलुओं से गुजरने के प्रयासों से देश के प्रति विद्यार्थियों को कुछ करने को जागरूक किया जा सकता है।

शिक्षण में नवाचार :
वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया में कई बार देखा गया है की नवाचार की आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षण प्रक्रिया में राष्ट्रीयता की भावना का विकास और मजबूत तरीके से प्रक्षेपित करने के लिए निम्नलिखत नवाचार का प्रयोग करना समय की आवश्यकता है।
(१) शिक्षा में राष्ट्र के प्रति हमारी सम्पूर्ण जानकारी विकसित हो सके ऐसा पठयक्रम क्रमबद्ध करना चाहिए।
(२) राष्ट्रिय स्मारक और राष्ट्र के सीमाचिन्ह और राष्ट्रगान के प्रति सम्मान जागरूक हो ऐसी भावना विकसित करने के प्रयास बढ़ने चाहिए।
(३) हमारे देश की इतिहास का सुचारु शिक्षण सभी विद्यार्थियों को मिल सके ऐसा पाठ्यक्रम में आयोजन करना चाहिए।
(४) हिन्दू राष्ट्र की विचारधारा और हिन्दू संस्कृति का महत्व, वेद, पुराण, उपनिषद, भगवतगीता जैसे पवित्र ग्रंथो का ज्ञान, सम्मान और महत्व समझे ऐसा प्रयास करना चाहिए।
(५) राष्ट्र के प्रति जस्बा जागरूक हो सके और शारीरिक तौर पर सक्षम मजबूत बनके देशसेवा कर सके इसके लिए सैनिक तालीम का आयोजन करना चाहिए।
(६) राष्ट्र के महानुभावो की जीवनी और उनके आदर्श को प्रस्तुत करना चाहिए।
(७) देशविरोधी मानसिकता न पनपे इसलिए मानसिक तौर पर मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए।
(८) समय समय पर सेमिनार, व्याख्यान, वर्कशॉप का आयोजन करके विद्यार्थियों को वर्तमान समस्या और उसमे विद्यार्थियों की क्या भूमिका है इसके बारे में इसकी जानकारी देनी चाहिए।
(९) राष्ट्र के प्रति विद्यार्थियों की जिम्मेदारी और महत्त्व को विद्यार्थियों को सुचारु तरीके से समझाना चाहिए।
(१०) विश्वविद्यालयों में शिक्षकों को भी देशविरोधी प्रवृतिओ में सम्मिलित न होते हुए विद्यार्थियों के समक्ष अच्ची छवि का निर्माण करना चाइये।
(११) गतल विचारधारा से प्रेरित न होते हुए परिस्थिति का मूल्यांकन शिक्षण संस्थानों में निरंतर होता रहे ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।
(१२) सभी शिक्षण संस्थानों में आदर्श परिस्थिति का निर्माण होता रहे और राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय स्मारकों और संस्कृति का जातां होता रहे साथ ही नई पीढ़ी तक हस्तांतरण होता रहे। इसी तर्ज पर आयोजन निरंतर करना चाहिए।

सारांश :
पिछले कुछ समय में देश की कुछ यूनिवर्सिटीज में हुई घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सही दिशा में और योग्य धारा में लाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना बेहद आवश्यक है। सम्पूर्ण भारत में शिक्षा के क्षेत्र में बहेतरीन प्रयास होते रहे है और आगे भी होते रहेंगे. शिक्षण संस्थानों के प्रयासों का अच्छा परिणाम प्राप्त होता रहता है। कुछ यूनिवर्सिटीज में होती घटनाओ से हमें यह ध्यान रखना पड़ेगा की ऐसी घटनाओ को रोका जाए और देश के युवा–धन को गलत विचारधारा में भटकने से बचाया जा सके. राष्ट्रीय भावना का विकास ही देश में युवा शिक्षार्थियों को सही दिशा दिखा सकता है।

सन्दर्भ :
(१) इंद्रा वाचस्पति, आर्य समाज का इतिहास
(२) नेहरु जे–,ल– दी डिस्कवरी ऑफ इंडिया
(३) गाँधी–,म–के–, यंग इंडिया
(४) भाटिया के–के–, करेंट प्रोब्लेम्स ऑफ इंडियन एजुकेशन

*** Corresponding Author:**
डॉ. नरेंद्र कुमार पाल Asst. Professor
M Ed College, 38 Keshav Banglow, Shahibaug, Ahmedabad
Email – drnavinsir@yahoo.in, 9924181920